Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 682–688

ROLE OF RASHTRAKUTA DYNASTY IN THE POLITICS AND CULTURE OF MEDIEVAL SOUTH INDIA

मध्यकालीन दक्षिण भारत की राजनीति और संस्कृति में राष्ट्रकूट वंश की भूमिका

Rajnarayan Yadav [1], Dewanshu Kumar Singh [2]

[1] Ph.D. (Bhu), Post Doctoral Fellow (ICSSR)
[2] Ph.D. (Delhi University)

ABSTRACT

English: There has been disagreement among historians regarding the beginning of the medieval period, where some historians consider it to have started after the 6th century after the fall of the Gupta dynasty while some consider it to have started from the 7th-8th century. After the fall of the Gupta Empire and between the beginning of the Delhi Sultanate, India was divided into many small states. Although many empires tried to reorganize it but could not do so for long. The most important period in this period was the tripartite conflict between the Gurjar-Pratihara, Pala and Rashtrakuta empires and the beginning of the Muslim invasion of India. Some of the dynasties that ruled during that period.

Hindi: मध्यकाल के प्रारम्भ को लेकर इतिहासकारों के बीच मतभेद रहा है, जहाँ कुछ इतिहासकार इसे गुप्त राजवंश के पतन के बाद छटी शताब्दी के बाद से शुरू हुआ मानते है जबकि कुछ इसे 7-8वीं शताब्दी से शुरू हुआ मानते है। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद और दिल्ली सल्तनत के शुरू होने के बीच भारतवर्ष कई छोटे राज्य में बटा हुआ था। हलांकि कई साम्राज्यों ने इसे पुनर्गठित करने की कोशिश की लेकिन ज्यादा समय के लिये नहीं कर सके। इस दौर में सबसे महत्वपूर्ण गुर्जर-प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट साम्राज्य के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष और भारत पर मुस्लिम आक्रमण का शुरूआत रहा। उस दौर के कुछ राजवंश जिन्होनें शासन किया।

Corresponding Author
Rajnarayan Yadav,
rajnarayan50@yahoo.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.2736

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

मध्यकाल के प्रारम्भ को लेकर इतिहासकारों के बीच मतभेद रहा है, जहाँ कुछ इतिहासकार इसे गुप्त राजवंश के पतन के बाद छटी शताब्दी के बाद से शुरू हुआ मानते है जबकि कुछ इसे 7-8वीं शताब्दी से शुरू हुआ मानते है। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद और दिल्ली सल्तनत के शुरू होने के बीच भारतवर्ष कई छोटे राज्य में बटा हुआ था। हलांकि कई साम्राज्यों ने इसे पुनर्गठित करने की कोशिश की लेकिन ज्यादा समय के लिये नहीं कर सके। इस दौर में सबसे महत्वपूर्ण गुर्जर-प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट साम्राज्य के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष और भारत पर मुस्लिम आक्रमण का शुरूआत रहा। उस दौर के कुछ राजवंश जिन्होनें शासन किया।

प्राचीन भारत और आधुनिक भारत के बीच के अवधि को मध्यकालीन भारत या मध्ययुगीन भारतीय इतिहास के रूप में भी दर्शाया गया है। भारतीय इतिहास के इस मध्यकालीन कालखंड को लगभग 1200 से 1750 इस्वी तक माना गया हैं।[1] भारत के मध्यकालीन इतिहास के अवधि को निर्धारण करने में कुछ इतिहासकारों में व्यापक रूप से भिन्नता है और प्रथम परिभाषा के अनुसार मध्यकालीन युग को छठी शताब्दी से लेकर सोलहवीं शताब्दी तक माना है। दूसरी परिभाषा के अनुसार मध्यकालीन युग को 13वी शताब्दी से मध्य 18वी शताब्दी तक माना गया है और ज्यादातर इतिहासकार इस कालावाधि के परिभाषा पर सहमति देते है, और इनमें से कुछ परिवर्तन कर नये कालविभाजन का तर्क भी प्रस्तुत किया गया हैं।

सामान्यतया भारत के मध्यकालीन इतिहास को दो काल खंडों में विभाजित किया जाता है-

1) **प्रारंभिक मध्यकाल (650 इसवी से 1200 इस्वी)**

2) **उत्तर मध्यकाल या मध्यकाल (1200 इसवी से 1750 इस्वी)**

भारतीय उपमहाद्वीप प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में, चालीस से अधिक विभिन्न राज्यों में विभाजित था, जिनमें विभिन्न संस्कृतियों को मानने वाले ,भाषाओं को बोलने वाले , लेखन प्रणालियों को अपनाने वाले और धर्मों में आस्था रखने वाले रहते थे।[2] भारतीय उपमहाद्वीप में 230 ईसा पूर्व से 1206 ई. तक भारत में मध्य साम्राज्य की राजनीतिक संस्थाएँ स्थापित थीं। मध्य साम्राज्य की अवधि मौर्य साम्राज्य के पतन और सिमुक द्वारा स्थापित सातवाहन राजवंश (230 ईसा पूर्व) के उदय के बाद शुरू होती है और 1206 ई. में समाप्त हुई।[3] इस प्रकार मध्य युगीन साम्राज्य की अवधि लगभग 1436 वर्षों तक चली। यह मध्य युगीन साम्राज्य 1206 में स्थापित दिल्ली सल्तनत का उदय[4] और बाद के चोलों (राजेंद्र चोल तृतीय, मृत्यु 1279 ई.)[5] के अंत के साथ ही हो गया।

इस मध्ययुगीन अवधि की शुरुआत में, बौद्ध धर्म सम्पूर्ण भारतीय क्षेत्र में फैला हुआ था। पाल साम्राज्य ने भारत के गंगा के मैदान में बौद्ध धर्म की संस्थाओं को मदद और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भारत के आधुनिक बिहार में बौद्ध नालंदा महाविहार ऐसी ही एक संस्था थी, जो विद्वत्ता का केंद्र था और जिसने विभाजित दक्षिण एशिया को वैश्विक बौद्धिक मंच पर एक साथ ला खड़ा कर दिया। पाल वंश के राजा धर्मपाल बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे उन्होंने बौद्ध नालंदा महाविहार (नालंदा विश्वविद्यालय) को 200 गांव दिए और उसका पुनरुद्धार किया।[6] उस समय की एक अन्य उपलब्धि चतुरंगा खेल का आविष्कार था जिसे बाद में यूरोप में निर्यात किया गया और शतरंज के नाम से जाना गया।[7] दक्षिणी भारत के तमिल हिंदू साम्राज्य, चोल ने विदेशी जमीन पर अपना साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की, जिसमें आधुनिक श्रीलंका, मलेशिया और इंडोनेशिया के कुछ हिस्सों पर अपने साम्राज्य के रूप में नियंत्रित किया और हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म को दक्षिण पूर्व एशिया के ऐतिहासिक सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रचार-प्रसार करने में मदद की।[8] इस अवधि में, अफ़गानिस्तान, तिब्बत और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे पड़ोसी क्षेत्र दक्षिण एशियाई प्रभाव में थे।[9]

प्रारंभिक मध्ययुग के इस अवधि को दो युगों में विभाजित किया जा सकता है : प्रथम , मौर्य साम्राज्य से लेकर 500 ई. में गुप्त साम्राज्य के अंत तक (शास्त्रीय भारत) और 500 ई. से आरंभिक मध्यकालीन भारत।[10] इसमें शास्त्रीय हिंदू धर्म का युग भी शामिल है, जो 200 ईसा पूर्व से 1100 ई. तक है।[11] प्रथम शताब्दी प्रारंभ से 1000 ई. तक, भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे बड़ी मानी जाती है, जिसके पास दुनिया की एक तिहाई से एक चौथाई संपत्ति थी।[12] इस के बाद 13वीं शताब्दी में उत्तरार्ध मध्यकालीन काल आया।

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, मौर्य साम्राज्य अतिव्यापी सीमाओं के साथ क्षेत्रीय शक्तियों का एक समूह बन गया। पूरे उत्तर-पश्चिम ने 200 ईसा पूर्व और 300 ई. के बीच कई आक्रमणकारियों को आकर्षित किया। पुराणों में इनमें से कई जनजातियों को विदेशी और अशुद्ध

1.स्टेन, बर्टन (2010), अर्नोल्ड, डी. (ईडी॰), ए हिस्टोरी ओएफ इंडिया (2 ईडी.), आक्सफोर्ड: वाइली-ब्लैकवेल, पी.105
2. कीय, जॉन (2000). इंडिया: ए हिस्टोरी. ग्रोव प्रेस. पी. ऍक्स्ऍक्स्-एक्सएक्सआई. पी. xx–xxi.
3. रायचौधुरी, हेमचंद्र (2006), पॉलिटिकल हिस्टोरी ओएफ एंसाइंट इंडिया, कोस्मो पब्लिकेशंस,पी.256-257
4. सेन, सैलेंद्र (2013). ए टेक्स्टबुक ओएफ मेडीवल इंडियन हिस्टोरी. प्राइमस बुक्स. पी. 72–80.
5. सक्कोट्टई कृष्णस्वामी अय्यंगर. साउथ इंडिया एंड हेर मुहम्मदन इनवेडर्स. एशियन एजुकेशनल सर्विसेज, 1991. पी. 38.
6. हिस्टोरी ओएफ बिहार, प्रोफ.आर्.चौधरी,1958, पी.117
7. मुर्रे, हॅच्.जे.आर्. (1913). ए हिस्टोरी ओएफ चेस. बेंजामिन प्रेस (ओरिजिनली पब्लिश्ड बाई ?? क्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).पी.26-51
8. हिस्टोरी ओएफ आसिया बाई बी.वी. राओ पी.211
9. केनेथ आर्. हल (1985). मैरीटाइम ट्रेड एंड स्टेट डेवलपमेंट आईएन अर्ली साउथईस्ट आसिया. यूनिवर्सिटी ओएफ हवाई प्रेस. पी. 63.
10. स्टेन, बी. (27 एप्रिल 2010), अर्नोल्ड, डी. (ईडी.), ए हिस्टोरी ओएफ इंडिया (2 ईडी.), आक्सफोर्ड: वाइली- ब्लैकवेल, पी. 105
11. माइकल्स, एक्सेल (2004), हिंदुइज्म. पास्ट एंड प्रेजेंट, प्रिंसटन, न्यू जर्सी: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, पी. 32
12. मैडिसन, एंगस (2006). थे वर्ल्ड इकोनॉमी – वॉल्यूम 1: ए मिलेनियल परस्पेक्टिव एंड वॉल्यूम 2: हिस्टॉरिकल स्टैटिस्टिक्स. ओईसीडी पब्लिशिंग बाई आर्गनाइजेशन फोर इकोनोमिक सीओ-आपरेशन एंड डेवलपमेंट. पी. 656.

बर्बर (म्लेच्छ) कहा गया है। अंततः मौर्य साम्राज्य के उत्तराधिकारी राज्य पहले सातवाहन राजवंश और फिर गुप्त साम्राज्य, इन दोनों ने आंतरिक रूप से ढहने से पहले उत्तरवर्ती विस्तार को डाले गए दबाव के कारण युद्धों द्वारा रोकने का प्रयास करते हैं।

आक्रमणकारी जनजातियाँ बौद्ध धर्म से प्रभावित थीं, जो आक्रमणकारियों और सातवाहनों तथा गुप्तों दोनों के संरक्षण में फलता-फूलता रहा और दोनों संस्कृतियों के बीच एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। समय के साथ, आक्रमणकारी "भारतीयकृत" हो गए क्योंकि उन्होंने गंगा के मैदानों में समाज और दर्शन को प्रभावित किया और इसके विपरीत वे भी इससे प्रभावित हुए, क्योंकि नए राज्य सिल्क रोड पर फैले हुए हैं। इस अवधि को सांस्कृतिक प्रसार और समन्वयवाद से प्रेरित बौद्धिक और कलात्मक उपलब्धियों के लिए जाना जाता है ।

2. गंगा के मैदान क्षेत्र और दक्षिण भारत

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, उत्तर-पश्चिम से मध्य एशियाई जनजातियों के आगमन को रोकने और उनका मुकाबला करने के लिए सातवाहन उत्तराधिकारी राज्य के रूप में उभरे। दक्कन के पठार पर फैले सातवाहनों ने बौद्ध धर्म के प्रसार और उत्तरी गंगा के मैदानों और दक्षिणी क्षेत्रों के बीच संपर्क के लिए एक कड़ी भी प्रदान की। उत्तर-पश्चिमी आक्रमणकारियों के साथ विवाद और आंतरिक कलह के कारण अंततः वे कमज़ोर हो गए और दक्कन और मध्य भारत के क्षेत्रों के आसपास कई राष्ट्रों को जन्म दिया, जबकि गुप्त साम्राज्य का उदय भारत-गंगा के मैदान में हुआ और इसने "स्वर्ण युग" की शुरुआत की और विकेंद्रीकृत स्थानीय प्रशासनिक मॉडल और भारतीय संस्कृति के प्रसार के रूप में साम्राज्य का पुनर्जन्म हुआ, जब तक कि हूण आक्रमणों के तहत इसका पतन नहीं हो गया। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद गंगा का क्षेत्र कई राज्यों में टूट गया, जो हर्ष के अधीन अस्थायी रूप से फिर से जुड़ गए और फिर राजपूत राजवंशों को जन्म दिया। दक्कन में चालुक्यों का उदय हुआ तथा एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण हुआ, जो कि सिंधु-गंगा के मैदानों में लम्बे समय से स्थापित सांस्कृतिक और सैन्य शक्ति के केन्द्रों के भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में बनने वाले नये राष्ट्रों की ओर स्थानांतरण का प्रतीक था।

3. राष्ट्रकूट राजवंश

यह कन्नड़ शाही राजवंश 6वीं से 10वीं शताब्दी के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से पर शासन करता था इसी दौर में एलोरा, (महाराष्ट्र) का निर्माण किया गया। “राष्ट्रकूट दक्षिण भारत, मध्य भारत और उत्तरी भारत के बड़े भूभाग पर राज्य (735-982) करने वाला राजवंश था सबसे पहला ज्ञात राष्ट्रकूट शिलालेख 7वीं शताब्दी का ताम्रपत्र अनुदान है जिसमें मध्य या पश्चिम भारत के एक शहर मनापुर से उनके शासन का विवरण दिया गया है। शिलालेखों में वर्णित उसी अवधि के अन्य शासक राष्ट्रकूट वंश अचलपुर के राजा और कन्नौज के शासक थे।“[13] यह 9वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों और कलचुरियों के बीच युद्ध का स्थल था।[14]इन शुरुआती राष्ट्रकूटों की उत्पत्ति, उनकी मूल मातृभूमि और उनकी भाषा के बारे में कई विवाद मौजूद हैं।

राष्ट्रकूट वंश, जिसने 6वीं और 10वीं शताब्दी के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से पर शासन किया था। सबसे पहला ज्ञात राष्ट्रकूट शिलालेख 7वीं शताब्दी का एक ताम्रपत्र है जिसमें मध्य या पश्चिम भारत के एक शहर मनापुर पर उनके शासन का विवरण दिया गया है। शिलालेखों में उल्लिखित इसी अवधि के अन्य शासक राष्ट्रकूट वंश अचलपुर के राजा और कन्नौज के शासक थे। प्रारंभिक राष्ट्रकूट वंश की उत्पत्ति, उनकी मूल मातृभूमि और उनकी भाषा के संबंध में कई विवाद मौजूद हैं। राष्ट्रकूट साम्राज्य ने 10वीं शताब्दी के अंत तक लगभग 200 वर्षों तक दक्कन पर प्रभुत्व जमाया और विभिन्न समयों पर उत्तर और दक्षिण भारत के क्षेत्रों पर भी नियंत्रण किया। यह न केवल उस समय की सबसे शक्तिशाली राजनीतिक सत्ता थी बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों में उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक सेतु के रूप में भी कार्य करती थी। राष्ट्रकूट वंश ने दक्षिण भारत में उत्तर भारतीय परंपराओं और नीतियों को लागू किया और उनका विस्तार दिया। गौरतलब है कि इस वंश ने भारत में राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में स्थिरता और उपलब्धियों की नई ऊंचाइयों को छुआ।

13. पी.एच्डी, जेम्स जी. लोचटेफेल्ड (15 डिसेम्बर 2001). थे इलस्ट्रेटेड इनसाइक्लोपीडिया ओएफ हिंदुइज्म, वॉल्यूम 2. थे रोसेन पब्लिशिंग ग्रुप, आईएनसी. महाराष्ट्र (इंडिया) (1986). महाराष्ट्र स्टेट गज़ेटरों. डायरेक्टोरेट ओएफ गवर्नमेंट प्रिंट., स्टेशनरी एंड पब्लिकेशंस, महाराष्ट्र स्टेट
14. रघुनाथन, ऍन्. (1999). मेमोरीज़, मेन, एंड मैटर्स. भारतीय विद्या भवन.पी.110

राष्ट्रकूट वंश की उत्पत्ति भारतीय इतिहास का एक विवादास्पद विषय रहा है। ये मुद्दे दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के समय के दौरान राष्ट्रकूटों के शुरुआती पूर्वजों की उत्पत्ति से संबंधित हैं,[15] और कई राष्ट्रकूट राजवंशों के बीच संबंध जिन्होंने 6वीं और 7वीं शताब्दी के बीच उत्तरी और मध्य भारत और दक्कन में छोटे राज्यों पर शासन किया। इन मध्ययुगीन राष्ट्रकूटों का सबसे बाद के राजवंश, प्रसिद्ध मान्यखेत (कर्नाटक राज्य के कलबुर्गी जिले में वर्तमान मालखेड) के राष्ट्रकूटों से संबंध थे, जिन्होंने 8वीं और 10वीं शताब्दी के बीच शासन किया।[16]

अचलपुर वंश बादामी चालुक्यों का एक सामंत था, और दंतिदुर्ग के शासन के दौरान, इसने चालुक्य कीर्तिवर्मन द्वितीय को उखाड़ फेंका और आधुनिक कर्नाटक के गुलबर्गा क्षेत्र को अपना आधार बनाकर एक साम्राज्य का निर्माण किया। यह वंश मान्यखेत के राष्ट्रकूट के रूप में जाना जाता है, जो 753 ईस्वी में दक्षिण भारत में सत्ता में आया। उसी समय बंगाल का पाल वंश और गुर्जर-प्रतिहार वंश क्रमशः पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भारत में ताकत हासिल कर रहा था। एक अरबी पाठ, सिलसिलेत अल-तवारीख (851), ने दुनिया के चार प्रमुख साम्राज्यों में से एक राष्ट्रकूटों को कहा।[17]

8वीं और 10वीं शताब्दियों के बीच की इस अवधि में समृद्ध गंगा के मैदानों के संसाधनों के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष देखा गया, इन तीनों साम्राज्यों में से प्रत्येक ने थोड़े समय के लिए कन्नौज में सत्ता की कुर्सी पर कब्ज़ा कर लिया। अपने चरम पर मान्यखेत के राष्ट्रकूटों ने उत्तर में गंगा नदी और यमुना नदी के दोआब से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैले एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया, जो राजनीतिक विस्तार, स्थापत्य उपलब्धियों और प्रसिद्ध साहित्यिक योगदानों का एक फलदायी समय था। इस राजवंश के शुरुआती राजा हिंदू धर्म से और बाद के राजा जैन धर्म से प्रभावित थे।

राष्ट्रकूट शासन के दौरान, जैन गणितज्ञों और विद्वानों ने कन्नड़ और संस्कृत में महत्वपूर्ण कार्यों में योगदान दिया। "इस राजवंश के सबसे प्रसिद्ध राजा अमोघवर्ष प्रथम ने कन्नड़ भाषा में एक ऐतिहासिक साहित्यिक कृति कविराजमार्ग लिखी। वास्तुकला द्रविड़ शैली के रूप में एक मील का पत्थर हैं, जिसका सबसे उत्कृष्ट उदाहरण आधुनिक महाराष्ट्र के एलोरा में कैलासनाथ मंदिर में देखा जाता है। अन्य महत्वपूर्ण योगदान काशीविश्वनाथ मंदिर और आधुनिक कर्नाटक के पट्टाडकल में जैन नारायण मंदिर हैं, जो दोनों यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं।"[18]

राष्ट्रकूट इतिहास के स्रोतों में मध्यकालीन शिलालेख, पाली भाषा में प्राचीन साहित्य,[19] संस्कृत और कन्नड़ में समकालीन साहित्य और अरब यात्रियों के लिखित दस्तावेज भी शामिल हैं।[20] राजवंशीय वंशावली (सूर्य वंश-सौर रेखा और चंद्र वंश-चंद्र रेखा), मूल क्षेत्र और पैतृक घर के बारे में सिद्धांत प्रस्तावित किए गए हैं, जो शिलालेखों, शाही प्रतीकों, प्राचीन कबीले के नाम जैसे "राष्ट्रिका", विशेषण (रत्ता, राष्ट्रकूट, लट्टलुरा पुरवराधिश्वर), राजवंश के राजकुमारों और राजकुमारियों के नाम और सिक्कों जैसे अवशेषों से प्राप्त जानकारी पर आधारित हैं।[21] विद्वान इस बात पर बहस करते हैं कि कौन से जातीय/भाषाई समूह प्रारंभिक राष्ट्रकूटों का दावा कर सकते हैं। संभावनाओं में कन्नड़िगा,[22] रेड्डी,[23] मराठा,[24] पंजाब क्षेत्र की जनजातियाँ,[25] या भारत के अन्य उत्तर पश्चिमी जातीय समूह शामिल हैं।[26]

---

15. रेउ, बिशेश्वर नाथ, .(1933) हिस्टोरी ओएफ थे राष्ट्रकूटास फ्रॉम थे बिगिनिंग टीओ थे माइग्रेशन ओएफ राओ सिहाजी टॉवर्ड्स मारवारपुब्लिशर: आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेंट, जोधपुर. पी.1–5
16. . रेउ (1933), पी.6–9, पी.47–53
17. रेउ (1933), पी.39
18. रेउ (1933), पी.1
19. अल्टेकर, अनंत सदाशिव (1934) . थे राष्ट्रकूटास एंड थीर टाइम्स; बीइंग ए पॉलिटिकल, एडमिनिस्ट्रेटिव, रिलिजियस, सोशल, इकोनोमिक एंड लिटरेरी हिस्टोरी ओएफ थे डेक्कन ड्यूरिंग सी. 750 ए.डी. टीओ सी. 1000 ए.डी. पूना: ओरिएंटल बुक एजेंसी.पी.242
20. कामथ, सूर्यनाथ यू. (2001). ए कंसाइज हिस्टोरी ओएफ कर्नाटक : फ्रॉम प्रे-हिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे प्रेजेंट. बैंगलोर: जुपिटर बुक्स. पी.72
21. कामथ (2001), पी.72–74
22. सिंह, उपिंदर (2008) . ए हिस्टोरी ओएफ एंसाइंट एंड अर्ली मेडीवल इंडिया:फ्रॉम थे स्टोन एज टी द 12 सेंचरी. इंडिया: पीयर्सन्स एजुकेशन.
23. रेउ, पंडित बिशेश्वर नाथ (1997) . हिस्टोरी ओएफ थे राष्ट्रकूटास (राठोदास). जयपुर: पब्लिकेशन स्कीम. पी.1
24. वैद्य, सी.वी. (1979) [1924]. हिस्टोरी ओएफ मीडिएवल हिंदू इंडिया (बीइंग ए हिस्टोरी ओएफ इंडिया फ्रॉम 600 टीओ 1200 ए.डी.). पूना: ओरिएंटल बुक सप्लाई एजेंसी. पी.171
25. हल्टज़्श एंड रेउ आईएन रेउ (1933), पी.2, पी.4
26. जे. ऍफ़्. फ्लीट आईएन रेउ (1933), पी.6

राष्ट्रकूट साम्राज्य के केंद्र में लगभग पूरा कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल थे, एक ऐसा क्षेत्र जिस पर राष्ट्रकूटों ने दो शताब्दियों से अधिक समय तक शासन किया था। समंगध ताम्रपत्र अनुदान (753) पुष्टि करता है कि सामंती राजा दंतिदुर्ग, जो संभवतः बरार के अचलापुरा (महाराष्ट्र में आधुनिक एलिचपुर) से शासन करता था, ने 753 में बादामी के कीर्तिवर्मन द्वितीय की महान कर्नाटक सेना (बादामी चालुक्यों की सेना का जिक्र) को हराया और चालुक्य साम्राज्य के उत्तरी क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया।[27] इसके बाद उन्होंने अपने दामाद, पल्लव राजा नंदीवर्मन द्वितीय को चालुक्यों से कांची वापस पाने में मदद की और गुर्जरों और कलिंग, कोसल और श्रीशैलम के शासकों को हराया।[28]

वेंगी (वर्तमान आंध्र प्रदेश) के पूर्वी चालुक्यों और दक्षिण में कांची के पल्लवों तथा मदुरई के पांड्यों के साथ भी राष्ट्रकूटों का बराबर संघर्ष चलता रहा। राष्ट्रकूटों के सबसे शक्तिशाली शासक सम्भवतः इन्द्र तृतीय (915-927)[29] तथा कृष्ण तृतीय (929-965)[30] थे। महीपाल की पराजय और कन्नौज के पतन के बाद 915 में इन्द्र तृतीय अपने समय का सबसे शक्तिशाली राजा था। इसी समय भारत आने वाले यात्री अल मसूदी के अनुसार 'बल्लभराज या बल्हर भारत का सबसे महान् राजा था और अधिकतर भारतीय शासक उसके प्रभुत्व को स्वीकार करते थे और उसके राजदूतों को आदर देते थे। उसके पास बहुत बड़ी सेना और असंख्य हाथी थे।'

4. त्रिपक्षीय संघर्ष में राष्ट्रकूटों की भूमिका

कन्नौज त्रिभुज युद्ध जिसे त्रिपक्षीय संघर्ष (785-816) भी कहा जाता है, उत्तरी भारत में कन्नौज के सिंहासन के नियंत्रण को लेकर लड़े गए युद्धों की एक श्रृंखला थी, जो उस समय पूरे आर्यावर्त पर शाही दर्जा रखने के बराबर था। इसमें उस युग के तीन शक्तिशाली शासक शामिल थे - गुर्जरों के राजा, गौड़ (बंगाल) के पाल राजा और दक्षिण के राष्ट्रकूट राजा।[31] युद्ध के परिणामस्वरूप अंततः गुर्जरों के राजा नागभट्ट द्वितीय ने 816 में कन्नौज का ताज जीत लिया था,[32] और खुद को कन्नौज का राजा घोषित कर दिया। आठवीं शताब्दी में, आर्यावर्त (उत्तरी भारत) की दो प्रमुख शक्तियाँ प्रतिहार थीं जिन्होंने गुर्जर साम्राज्य पर शासन किया दक्कन में मान्यखेत के राष्ट्रकूटों का शासन था, जिन्होंने उत्तर की ओर अपने क्षेत्र का विस्तार करने और आर्यावर्त पर नियंत्रण करने की कोशिश की। इससे कन्नौज त्रिकोणीय युद्ध का निर्माण हुआ, इनके बीच संघर्ष दशकों तक चला।

कन्नौज पर संघर्ष शुरू होने से पहले ही, राष्ट्रकूट साम्राज्य के संस्थापक दंतिदुर्ग ने प्रतिहार वंश के नागभट्ट प्रथम को हराया था, जैसा कि एलोरा में दंतिदुर्ग के दशावतार मंदिर शिलालेख और अमोघवर्ष प्रथम के संजन शिलालेख से स्पष्ट है, दोनों राष्ट्रकूट वंश से संबंधित हैं[33], जिसमें कहा गया है कि दंतिदुर्ग (735-756) ने उज्जयनी में एक धार्मिक समारोह किया था, और गुर्जर-देश के राजा ने उनके द्वारपाल (प्रतिहार) के रूप में काम किया था,[34] जो यह सुझाव देता है कि राष्ट्रकूट राजा ने प्रतिहार राजा को अपने अधीन कर लिया था जो उस समय अवंती पर शासन कर रहा था।[35]

बंगाल के पाल और कन्नौज के अयुधों के बीच संघर्ष एक पुराने सत्ता संघर्ष की निरंतरता थी जो कन्नौज के हर्षवर्धन और गौड़ के शशांक के बीच सातवीं शताब्दी में शुरू हुआ था और बारहवीं शताब्दी तक जारी रहा। ये क्षेत्रीय संघर्ष अयुध वंश के उत्तराधिकार के मुद्दे पर और भी अधिक बढ़ गए थे। साथ ही, इन चार शक्तियों, यानी प्रतिहार साम्राज्य, पाल साम्राज्य, राष्ट्रकूट साम्राज्य ने कन्नौज पर काबिज करने के लिए आपस में भागीदारी की थी। वत्सराज और नागभट्ट द्वितीय द्वारा कन्नौज पर विजय प्राप्त करने के प्रयासों को राष्ट्रकूट राजा ध्रुव और गोविंदा

27. फ्रॉम राष्ट्रकूटा इंस्क्रिप्शंस कॉल थे बदामी चालुक्य आर्मी कर्नाटबाला (पॉवर ओएफ करनाता) (कामथ 2001, पी.57, पी.65)
28. थापर, रोमिला (2003) . पेंगुइन हिस्टोरी ओएफ अर्ली इंडिया: फ्रॉम ओरिगिंस टीओ एडी 1300. न्यू देल्ही: पेंगुइन.
29. कामथ, सूर्यनाथ यू. (2001). ए कंसाइज हिस्टोरी ओएफ कर्नाटक : फ्रॉम प्रे-हिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे प्रेजेंट. बैंगलोर: जुपिटर बुक्स.पी.80
30. शास्त्री, नीलकांता के.ए. (2002). ए हिस्टोरी ओएफ साउथ इंडिया फ्रॉम प्रीहिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे फॉल ओएफ विजयनगर. न्यू देल्ही: इंडियन ब्रांच, ?? क्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.पी.356
31. सेन, ऍस्.ऍन्. (2013). ए टेक्स्टबुक ओएफ मेडीवल इंडियन हिस्टोरी. देल्ही: प्राइमस बुक्स.पी.1-12
32. रिमा हूजा (2006). ए हिस्टोरी ओएफ राजस्थान. रूपा & कंपनी. पी. 185.
33. कामथ, सूर्यनाथ यू. (2001), ए कंसाइज हिस्टोरी ओएफ कर्नाटक : फ्रॉम प्रे-हिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे प्रेजेंट, बैंगलोर: जुपिटर बुक्स,पी.77
34. बैज नाथ पूरी (1957). थे हिस्टोरी ओएफ थे गुर्जरा-प्रतिहāरास. मुंशीराम मनोहरलाल. पी. 10–11.
35. रामा शंकर त्रिपाठी (1959). हिस्टोरी ओएफ कनौज: टीओ थे मोसलेम कॉन्क्वेस्ट. मोतीलाल बनारसीदास. पी. 226-227.

तृतीय द्वारा विफल कर दिया गया, जिससे कन्नौज शहर पाल वंश के नियंत्रण में आ गया, हालाँकि, गुर्जर-प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय अंततः कन्नौज शहर पर कब्जा करने में सफल रहे, और यह शहर 1036 में राजवंश के पतन तक उनके वंशजों की राजधानी बना रहा।[36]

5. राष्ट्रकूटों का शासनतंत्र

राष्ट्रकूटों ने एक सुव्यवस्थित शासन प्रणाली को जन्म दिया था। इस काल का प्रशासन राजतन्त्रात्मक था वहीं राजा को सभी अधिकार प्राप्त थे। "इस वंश में राजपद आनुवंशिक होता था और शासन संचालन के लिए सम्पूर्ण राज्य को राष्ट्रों, विषयों, भूक्तियों तथा ग्रामों में विभाजित किया गया था। राष्ट्र, जिसे 'मण्डल' कहा जाता था, प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई थी। वहीं प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' थी। राष्ट्र के प्रधान को 'राष्ट्रपति' या 'राष्ट्रकूट' कहा जाता था। एक राष्ट्र चार या पाँच ज़िलों के बराबर होता था। पूर्व में राष्ट्र कई विषयों एवं ज़िलों में विभाजित था। एक विषय में 2000 गाँव होते थे। विषय का प्रधान 'विषयपति' कहलाता था। विषयपति की सहायता के लिए 'विषय महत्तर' होते थे। विषय को ग्रामों या भुक्तियों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक भुक्ति में लगभग 100 से 500 गाँव होते थे। ये आधुनिक तहसील की तरह ही थे। भुक्ति के प्रधान को 'भोगपति' या 'भोगिक' कहा जाता था। इसका पद आनुवांशिक होता था। वेतन के बदले इन्हें 'करमुक्त भूमि' प्रदान की जाती थी। वहीं भुक्ति को भी छोटे-छोटे गाँव में बाँट दिया जाता था, जिनमें 10 से 30 गाँव होते थे। जिसमें नगर के अधिकारी को 'नगरपति' कहा जाता था। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई 'ग्राम' होती थी। ग्राम के अधिकारी को 'ग्रामकूट', 'ग्रामपति', 'गावुण्ड' आदि नामों से पुकारा जाता था। इस काल में एक ग्राम सभा भी होती थी, जिसमें ग्राम के प्रत्येक परिवार का सदस्य होता था। बता दें कि गाँव की समस्याओं का निवारण करना इन्हीं का प्रमुख कार्य था।"[37]

6. राष्ट्रकूट वंश का धर्म

राष्ट्रकूट शासकों के संरक्षण में हिंदू एवं जैन धर्म का अधिक विकास हुआ। "उस समय हिंदू धर्म सर्वाधिक प्रचलित था और प्रारंभिक राष्ट्रकूट शासक हिंदू धर्म के अनुयायी थे तथा विष्णु एवं शिव की आराधना करते थे। राष्ट्रकूट शासक अपनी शासकीय मुद्राओं पर गरुढ़, शिव अथवा विष्णु के आयुधों का प्रयोग करते थे। राष्ट्रकूट वंश में हिंदू धर्म के साथ ही जैन धर्म का भी अधिक प्रचार-प्रसार हुआ। बता दें कि उस समय जैन घर्म को 'राजकीय संरक्षण' प्रदान था।"[38] राष्ट्रकूट शासक 'अमोघवर्ष' के समय में जैन धर्म का सर्वाधिक विकास हुआ। अमोघवर्ष के गुरु 'जिनसेन' जैन थे, जिन्होंने 'आदि पुराण' की रचना की थी।[39] राष्ट्रकूट वंश के युवराज कृष्ण के अध्यापक 'गुणभद्र' प्रसिद्ध जैनाचार्य थे।[40]

राष्ट्रकूट वंश का कला और साहित्य के क्षेत्र में योगदान

राष्ट्रकूट वंश में कई राजा अध्ययन और कला के प्रति समर्पित थे। "एलोरा और हाथी के शानदार रॉक-कट गुफा मंदिर, राष्ट्रकूटों के योगदान को दर्शाते हैं। राष्ट्रकूट वंश के द्वितीय राजा, 'कृष्ण प्रथम' (लगभग 756 से 773) ने एलोरा में चट्टान को काटकर 'कैलाश मंदिर' का निर्माण करवाया था।"[41] राष्ट्रकूटों की सबसे शानदार और भव्य रचना है। इस राजवंश के प्रसिद्ध शासक 'अमोघवर्ष प्रथम' ने, लगभग 814 से 878 ईसवी[42] तक शासन किया, और सबसे पुरानी ज्ञात कन्नड कविता 'कविराजमार्ग' के कुछ खंडों की रचना की थी।[43]

राष्ट्रकूटों के शासनकाल में कन्नड़ और संस्कृत भाषा में कई ग्रंथों की रचना हुई. उनके शासन काल में जैन गणितज्ञों और विद्वानों ने 'कन्नड' व 'संस्कृत' भाषाओं के साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।[44] उनकी 'द्रविणन शैली' की वास्तुकला आज भी मील का पत्थर मानी जाती है, जिसका एक प्रसिद्ध उदाहरण 'एलोरा' का 'कैलाशनाथ मन्दिर' है। अन्य महत्वपूर्ण योगदानों में 'महाराष्ट्र' में स्थित 'एलीफेंटा

36. चंद्र, सतीश (2004). मेडीवल इंडिया: फ्रॉम सुल्तानत टीओ थे मुगल्स-देल्ही सुल्तानत (1206–1526) – पार्ट ओने. हार-आनंद पब्लिकेशंस. पी. 19–20.
37. ए. ऍस्. अल्टेकर, "राष्ट्रकुटांस", आईएन जी. यज़दानी (ईडी.), अर्ली हिस्टोरी ओएफ थे डेक्कन पार्ट्स ऐ-वीऐ, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बॉम्बे, 1960, पी. 303.
38. कामथ, सूर्यनाथ यू. (2001) . ए कंसाइज हिस्टोरी ओएफ कर्नाटक : फ्रॉम प्रे-हिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे प्रेजेंट. बैंगलोर: जुपिटर बुक्स.पी-92
39. क्नरसिम्हाचार्य, रामानुजपुरम (1988), हिस्टोरी ओएफ कन्नड़ा लिटरेचर (रीडरशिप लेक्चर्स), एशियन एजुकेशनल सर्विसेज, पी. 2
रेउ, पंडित बिशेश्वर नाथ (1997), हिस्टोरी ओएफ थे राष्ट्रकूटास (राठोदास), जयपुर: पब्लिकेशन स्कीम, पी. 35-36
40. जैन, पन्नालाल, ईडी. (1951), महापुराण आदिपुराण ओएफ भागवता जिनसेनाचार्य, भारतीय ज्ञानपीठा पी. 30–31.
41. ओवेन, लिसा (2012). कार्विंग डिवोशन आईएन थे जैन केव्स एटी एल्लोरा. ब्रिल एकेडमिक. पी. 1–2.
42. कामथ, सूर्यनाथ यू. (2001) , ए कंसाइज हिस्टोरी ओएफ कर्नाटक : फ्रॉम प्रे-हिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे प्रेजेंट, बैंगलोर: जुपिटर बुक्स,पी.79
43. शास्त्री, नीलकांता के.ए. (2002), ए हिस्टोरी ओएफ साउथ इंडिया फ्रॉम प्रीहिस्टोरिक टाइम्स टीओ थे फॉल ओएफ विजयनगर, न्यू देल्ही: इंडियन ब्रांच, ?? क्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,पी.355
44. कामथ (2001), पी.92

गुफाओं' की मूर्तिकला तथा कर्नाटक के 'पताद्क्कल' में स्थित 'काशीविश्वनाथ' और 'जैन मंदिर' आदि आते हैं, इतना ही नहीं यह सभी 'यूनेस्को' की वर्ल्ड हेरिटेज साईट में भी शामिल हैं।[45] राष्ट्रकूट वंश का शाही प्रतीक सुनहरा बाज़ था.[46]

7. राष्ट्रकूट राजवंश का पतन

राष्ट्रकूट वंश के सम्राट खोट्टिम या खोटिगा या अमोघवर्ष चतुर्थ (शासनकाल 967-972 ई.), जिन्होंने नित्यवर्ष की उपाधि धारण की, एक राष्ट्रकूट सम्राट थे।[47] उनके शासनकाल के दौरान, राष्ट्रकूटों का पतन शुरू हो गया। "परमार राजा सियाका द्वितीय ने मान्यखेत को लूटा और खोटिगा उनसे लड़ते हुए मारे गए। यह जानकारी पुष्पदंत द्वारा लिखित जैन ग्रंथ महापुराण से मिलती है। 968 ई. में, खोटिगा ने शांतिनाथ के महामस्तकाभिषेक के लिए दानवुलापाडु जैन मंदिर में एक पनवत्ता स्थापित किया।"[48]

अमोघवर्ष चतुर्थ के बाद कर्क द्वितीय ने शासन किया, जिन्होंने केवल कुछ महीनों तक शासन किया। करका द्वितीय (शासनकाल 972 - 991 ई.),[49] निरुपमा का पुत्र था, जो एक राष्ट्रकूट राजकुमार था, जो पिछले राष्ट्रकूट सम्राट खोटिगा का छोटा भाई था। उसने अपने चाचा खोटिगा अमोघवर्ष का स्थान लिया। इस समय तक एक बार महान राष्ट्रकूट साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर था और परमार राजा सियाका द्वितीय द्वारा मान्यखेत की लूट से पैदा हुई कमज़ोरियों ने राष्ट्रकूटों को और अधिक लूटने के लिए मजबूर कर दिया, जो लंबे समय तक जीवित नहीं रहे। इस भ्रम के समय के दौरान, कल्याणी के चालुक्य तैलप द्वितीय ने कर्क द्वितीय को मार डाला, राष्ट्रकूट की राजधानी मान्यखेत पर अपना अधिकार कर लिया।[50]

इंद्र चतुर्थ (शासनकाल 973-982 ई.) अंतिम राष्ट्रकूट सम्राट थे और पश्चिमी गंगा राजवंश के सामंती राजा तलकाड़ के भतीजे थे। तैलप द्वितीय द्वारा मान्यखेत पर कब्ज़ा करने के बाद, गंगा महाराजा मारसिंह द्वितीय ने बांकापुरा में इंद्र तृतीय को सम्राट के रूप में ताज पहनाया और मालवा के परमारों के विश्वासघात और आक्रमण के बाद कम होते राष्ट्रकूट साम्राज्य को बरकरार रखने के लिए कड़ी मेहनत की, लेकिन वे सफल नहीं हुए। मारसिंह द्वितीय ने 975 में बांकापुरा में सल्लेखना की और उसके बाद 982 में इंद्र चतुर्थ ने श्रवणबेलगोला में शासन किया।[51]इस प्रकार, अंततः राष्ट्रकूट वंश का पतन हो गया। हालाँकि, मान्यखेत साम्राज्य के साम्राज्यिक विस्तार के दौरान भारत के विभिन्न हिस्सों में कई संबंधित परिवार सत्ता में आए। लट्टलूरा और सौंदत्ती शाखाओं जैसे ये राज्य कई शताब्दियों तक शासन करते रहे।

राष्ट्रकूट राजवंश के शासकों ने सैन्य कौशल से अपने क्षेत्र का विस्तार किया। राष्ट्रकूट राजवंश ने धार्मिक सहिष्णुता का अभ्यास किया और विभिन्न धर्मों का समर्थन किया। राष्ट्रकूट राजवंश के शासकों ने कला, साहित्य और वास्तुकला के क्षेत्र में कई काम कराए। राष्ट्रकूट राजवंश के शासकों ने एलोरा में रॉक-कट मंदिरों जैसे उल्लेखनीय स्मारकों का निर्माण करवाया। राष्ट्रकूट राजवंश के शासकों ने विकेंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली अपनाई थी। राष्ट्रकूटों ने दक्षिण भारत को ही नहीं, बल्कि समकालीन उत्तर भारत की राजनीति को भी प्रभावित किया. राष्ट्रकूट वंश के शासकों ने दक्षिण भारत, मध्य भारत और उत्तरी भारत के बड़े भू-भाग पर शासन किया. जिस समय उत्तर भारत में प्रतिहारों एवं पालों का उदय हो रहा था उसी समय दक्षिण भारत मे राष्ट्रकूटों का उत्कर्ष हो रहा था, जिन्होंने मान्यखेट को अपनी राजधानी बनाकर उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप किया। कन्नौज को उत्तर भारत में संप्रभुता का प्रतीक माना जाता था क्योंकि कन्नौज पर नियंत्रण के साथ ही ऊपरी गंगा घाटी और उसके समृद्ध संसाधनों पर भी नियंत्रण था। पूर्व में पालों, पश्चिम में प्रतिहारों और दक्कन में राष्ट्रकूटों के समकालीन उदय ने कन्नौज और पूरे उत्तर पर प्रभुत्व के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष को जन्म दिया।

45. हार्डी, अदम (1995). इंडियन टेम्पल आर्किटेक्चर: फॉर्म एंड ट्रांसफॉर्मेशन-थे करनाता द्रविड़ा ट्रेडिशन 7टीएच् टीओ 13 सेंचुरीज. अभिनव पब्लिकेशंस.पी.111/341

46. थे एम्बलम चेंज्ड फ्रॉम लायोन टीओ गरुड़ा लेटर रेउ, पंडित बिशेश्वर नाथ (1997). हिस्टोरी ओएफ थे राष्ट्रकूटास (राठोदास). जयपुर: पब्लिकेशन स्कीम.पी.14

47. के. ए. नीलकांता शास्त्री (1960). " द चालुक्य ऑफ़ कल्याणी एंड द कलचुरी ऑफ़ कल्याणी इन घुलम यज़दानी (ईडी.)' द अर्ली हिस्टोरी ओएफ थे डेक्कन पार्ट्स. वोल. 1 (पार्ट्स ऐ-ऐवी).आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पी. 297

48. नंदी, रामेंद्र नाथ (1973). रिलिजियस इंस्टीट्यूशंस एंड कल्ट्स आईएन थे डेक्कन, सी. ए.डी. 600-ए.डी. 1000. मोतीलाल बनारसीदास. पी. 35.

49. अल्टेकर, अनंत सदाशिव (1934) . थे राष्ट्रकूटास एंड थीर टाइम्स; बीइंग ए पॉलिटिकल, एडमिनिस्ट्रेटिव, रिलिजियस, सोशल, इकोनोमिक एंड लिटरेरी हिस्टोरी ओएफ थे डेक्कन ड्यूरिंग सी. 750 ए.डी. टीओ सी. 1000 ए.डी. पूना: ओरिएंटल बुक एजेंसी., पी.131

50. महाराष्ट्र स्टेट गज़ेटरों: धुलिया. डायरेक्टर ओएफ गवर्नमेंट प्रिंटिंग, स्टेशनरी एंड पब्लिकेशंस, महाराष्ट्र स्टेट. 1960.

51. सेत्तर, ऍस्. (1989). इनवाइटिंग डेथ: इंडियन एटिट्यूड टॉवर्ड्स थे रिचुअल डेथ. मोनोग्राफ एंड थियोरेटिकल स्टडीज आईएन सोशियोलॉजी एंड एंथ्रोपोलॉजी. वोल. 28. ब्रिल. पी. 21.